

Acc: No: 58.58.

श्री: 18.1653.

स्वप्नप्रकाशिका ।

पाठकज्ञातीयमाथुर श्रीकृष्णलाल-
तनयदत्तरामेण
संकलिता स्वकृतभाषाटीकाविभूषिता
संशोधिता च ।

सा च

श्रीकृष्णदासात्मजेन

गङ्गाविष्णुना

स्वकीये

“लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर” मुद्रणालयेऽङ्कित्वा
प्रसिद्धिं नीता ।

कल्याण—(मुंबई.)

संवत् १९५० शके १८१५

अस्य ग्रन्थस्य पुनर्मुद्रणाद्यधिकारः १८६७ तमा-
ब्दिकराजनियमानुसारेण प्रकाशकाधीनः ।

अथ स्वप्नप्रकाशिका-
अनुक्रमणिका ।

विषयः	पृष्ठं.	विषयः	पृष्ठं.
सप्तविध स्वप्न	१	दुःस्वप्नका परिहार	१७
तहांपंचविध स्वप्न निष्फल २		ग्रन्थान्तरे....	१८
स्वप्न देखनेका कारण	११	पराशरस्मृतौ	११
प्रमाणान्तर	३	सुश्रुते	११
तत्रादौ रोगभाविस्वप्न	११	चरके	१९
रक्तपित्तसंभव	११	अथ शुभस्वप्न	११
रक्त रोग....	४	बृहद्यात्रा ग्रंथमें वराहका....	
गुल्मरोग....	११	प्रमाण	२२
कुष्ठ रोग....	११	आचारमयूखे	२४
प्रमेह रोग	५	बृहस्पतीके मतसैं	२६
उन्माद रोग	११	पराशरसंहिता	२८
अपस्मार रोग	६	निष्फल स्वप्न	३०
बहिरायाम रोग	७	तथाच	११
अनेक रोगोंमें विविध स्वप्न ११		प्रकृतिजन्य स्वप्न	११
अथ अशुभ स्वप्न....	८	स्वप्नका प्रहरपरत्वे फल....	३१
सुश्रुतके मतसैं अशुभ स्वप्न १०		स्वप्नदर्शनकी विधि	३२
विष्णुपुराणके मतसैं अशुभ		शयनके समय जपनीय मंत्र ,	
स्वप्न....	१३	शयनके नियम	३३
वराह पुराणमत ...	११	स्वप्नप्रकाशिकाके पाठका फल	
मार्कण्डेय पुराणमत	१४		

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

Acc: NO: 5858-
B. 1653-
श्री: 1000-19
P8: LIBRARY

श्रीशं वन्दे

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ स्वप्नप्रकाशिकाप्रारम्भः ।

स्वप्नाधिपं हरिं नत्वा स्वप्नविज्ञानहेतवे । स्वप्न-
प्रकाशिकां वक्ष्ये सर्वचित्तानुगामिनीम् ॥ १ ॥

अर्थ-स्वप्नाधिप श्रीहरिको नमस्कार कर स्वप्न विज्ञानके
लिये सबके चित्तमें गमन करनेवाली अर्थात् सबको प्रिय ऐसी
स्वप्नप्रकाशिकाको कहते हैं ।

स्वप्नानतः प्रवक्ष्यामि मरणाय शुभाय च । सु-
हृदो यांश्च पश्यन्तिव्याधितो वा स्वयं तथा ॥ २ ॥

अर्थ-अब मैं स्वप्नोंको कहूंगा जिनको मरणके अर्थ अथवा
अच्छा होनेके अर्थ रोगीके सुहृद अथवा स्वयंरोगी देखता है ।

सप्तविधस्वप्न

दृष्टः श्रुतोऽनुभूतश्च प्रार्थितः कल्पितस्तथा ।
भाविको दोषजश्चैव स्वप्नः सप्तविधो विदुः ॥ ३ ॥

अर्थ-तहाँ कहते हैं कि स्वप्न सात प्रकारका है । १ दृष्ट (जो
दिनमें देखा हो उसीको रात्रिको स्वप्नमें देखे) २ श्रुत (जो
बात सुनी हो उसीको स्वप्नमें देखे) ३ अनुभूत (जो बात
जाग्रतअवस्थामें अनुभव करी हो उन्हींको स्वप्नमें देखे) ४ प्रार्थि-

त (जो वस्तुको जाग्रत अवस्थामें इच्छा की हो उसीको स्वप्नमें देखना) ५ कल्पित (जो दिनमें किसी वस्तुकी कल्पना करे वो स्वप्नमें देखे) ६ भाविक (जो दृष्टश्रुतसें विलक्षण देखे और उसको उसका वैसाही फल हो उसको भाविक जानना) ७ दोषज (अर्थात् वात पित्त कफ इनकी प्रकृतिके अनुसार स्वप्न देखना ।

तत्र पञ्चविधं पूर्वमफलं भिषगादिशेत् । दिवा-
स्वप्नमतिह्रस्वमतिदीर्घं च बुद्धिमान् ॥ ४ ॥

दृष्टः प्रथमरात्रे यः स्वप्नः सोऽल्पफलो भवेत् ।
न स्वप्याद्यं पुनर्दृष्ट्वा स सद्यः स्यान्महाफलः ५

अर्थ—तिन दृष्टादिक सात स्वप्नोंमें प्रथमके पांच स्वप्नोंको वैद्य निष्फल कहे । तथा दिनका स्वप्न एवं अति छोटा अथवा अत्यंत बड़ा स्वप्नकोभी वैद्य निष्फल जाने और जो स्वप्न प्रथमरात्रीमें देखा हो वह अल्प फलको देता है । जिस स्वप्नको देखकर फिर न सोवे वह स्वप्न शीघ्र महाफलको देय है ।

१ वाग्भट लिखते है कि जो प्रकृतिसंबन्धि स्वप्न अर्थात् जैसे दोषकी प्रकृति हो उसीप्रकारका स्वप्न देखाहुआभी निष्फल है । जैसे वातप्रकृतिवाला वातप्रकृतिके अनुरूप स्वप्न देखे । पित्तप्रकृतिवाला पित्तप्रकृतिके और कफप्रकृति कफप्रकृतिके एवं द्वंद्वज और त्रिदोषज जो द्वंद्वजके और त्रिदोषज प्रकृतिके अनुरूप स्वप्न देखे तो निष्फल है और जिस स्वप्नको देखा उसकी विस्मृति होजावे वोभी निष्फल है शेषसमान है ।

मनोवहानां पूर्णत्वाद्दोषैरतिबलैस्त्रिभिः । स्रोत-
सां दारुणान् स्वप्नान् काले पश्यत्यदारुणान् ६ ।

१ तेष्वप्यानिष्फलाः पञ्चयथास्वप्नप्रकृतिर्दिवा । विस्मृतो दीर्घस्वप्नोतिपर्वरात्रे चि-
रात्फलम् ॥ दृष्टः करोति तुच्छं च गोसर्गे तदहर्मेव । निद्रया चानुपहतः प्रतीपैर्वचनैस्तथा ।

अर्थ—मनोवह अर्थात् मनके वहनेवाली नाडीयोंके छिद्र जिससमय अतिबली तीनों दोषोंसें पूर्ण होजाते है उस कालमें यह मनुष्य दारुण (खोटे) और अदारुण (शुभ) स्वप्नोंको देखता है ।

नातिप्रसुप्तः पुरुषः सफलानफलानपि । इन्द्रि-
येशेन मनसा स्वप्नान् पश्यत्यनेकधा ॥ ७ ॥

अर्थ—जिससमय यह पुरुष न अत्यंत सोता हो और न जागता हो उससमय इन्द्रियोंके अधिपति मनकरके सुफल और निष्फल अनेकप्रकारके स्वप्नोंको देखता है । जिसमें स्वप्न देखता है उस अवस्थाको स्वप्नावस्था कहते है ।

तथाच ग्रन्थान्तरे

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनोह्युपरतं तथा । विषये
भ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति ॥ ८ ॥

अर्थ—और ग्रन्थान्तरोमेंभी लिखा है कि जिससमय संपूर्ण इन्द्री और मन विषयोंसें उपरामको प्राप्त होते है, तब यह प्राणी अनेक प्रकारके भले बुरे स्वप्नोंको देखता है ।

तत्रादौ रोगभाविस्वप्नाः

श्वभिरुष्ट्रैः खरैर्वापि याति यो दक्षिणां दिशम् ।
स्वप्ने यक्ष्मा तमाविश्य न जीवन्नवसृज्यते ॥ ९ ॥

अर्थ—तहाँ प्रथम रोग होनहार स्वप्नोंको कहते है । जो मनुष्य स्वप्नमें कुत्ता, ऊँट, और गधेपर चढ़के दक्षिणदिशाको जाता है, उसके राजयक्ष्माका रोग होकर मरता है ।

रक्तपित्तसंभवे

लाक्षारक्ताम्बराभं यः पश्यत्यम्बरमन्तिकात् ।
स रक्तपित्तमासाद्य तेनैवान्ताय नीयते ॥ १० ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लाख और लाल वस्त्रके समान आकाशको देखता है वह रक्तपित्तरोगोंको प्राप्त हो और उसी रक्तपित्तसे मरणको प्राप्त होता है ।

रक्तरोगे

रक्तस्रग्गतसर्वाङ्गो रक्तवासा मुहुर्हसन् । यः
स्वप्ने हियते नार्या स रक्तं प्राप्य सीदति ॥११॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लाल फूलमाला और अपने संपूर्ण अंगोंको लाल और लाल वस्त्रोंका धारण करता वारंवार हंसता है, एवं जिसको स्वप्नमें लालवस्त्र धारण करनेवाली स्त्री खींचती है वह रुधिरके रोगसे मरता है ।

गुल्मरोगे

शूलाटोपान्त्रकूटाश्च दौर्बल्यं जातिमात्रया । न
खादिषु च वैवर्ण्यं गुल्मेनान्तकरो नरः ॥१२॥

अर्थ-जिस मनुष्यके स्वप्नमें शूलरोग, अफरा, अंतोंका रोग, अत्यन्त दुर्बलताका रोग, और जिसके नख दुष्टरंगके होजाय उस मनुष्यकी मृत्यु गुल्मरोगसे होती है ।

लताकण्टकिनी यस्य दारुणा हृदि जायते ।
स्वप्ने गुल्मस्तमन्ताय क्रूरो विशति मानवम् ॥१३॥

अर्थ-जिस स्वप्नमें मनुष्यके हृदयमें घोर कांटेवाली लता (वेल) उत्पन्न होय उसमनुष्यके मारनेको क्रूर गुल्मरोग उसकी देहमें प्रवेश करता है ।

कायेऽल्पमपि संस्पृष्टं सुभृशं यस्य दीर्यते ।
क्षतानि च नरो हन्ति कुष्ठैर्मृत्युर्हिनस्ति तम् ॥१४॥

नग्नस्याज्यावसिक्तस्य जुह्वतोऽग्निमनर्चिषम् ।
पद्मान्युरासि जायन्ते स्वप्ने कुष्ठैर्मरिष्यतः १५॥

अर्थ-जिसकी देह नेंकभी स्पर्श करनेसे फसजावे और घाव होजावे वो मनुष्य कुष्ठकरके मरण पाताहै । यह जाग्रत अवस्थामें जानना और यही मनुष्य स्वप्नमें नग्नहो घृतको देहमें लगावे और ज्वालारहित अग्निमें हवन करे तथा उसके हृदयमें कमल प्रगट होय वो कुष्ठकरके मरेगा ऐसा जानना ।

प्रमेहरोगे

स्नातानुलितगात्रेऽपि यस्मिन् गृध्यन्ति मक्षिकाः ।
स प्रमेहेण संस्पर्शं प्राप्य तेनैव हन्यते ॥ १६ ॥
स्नेहं बहुविधं स्वप्ने चांडालैः सहयः पिबन् ।
बध्यते स प्रमेहेण स्पृश्यतेऽन्ताय माधवः १७

अर्थ-जो मनुष्य स्नान करचुकाहो और तैलआदिका मालिश करचुकाहो तथापि उसकी देहमें मक्खी आनकर बैठे, वह मनुष्य प्रमेहरोगको प्राप्तहो और उसी प्रमेहरोगकरके मारा जाताहै यह जाग्रत अवस्थामें जानना । अब कहतेहै कि वही मनुष्य स्वप्नमेंचांडाल (भंगी डोम आदि) के साथ अनेक प्रकार के घृततैलादि स्नेहका पान करताहै वो प्रमेहकरके मरता है ।

ध्यानायामौतथोद्वेगश्चोहश्च स्थानसम्भवः ।
अरतिर्बलहानिश्च मृत्युरुन्मादपूर्वकः ॥ १८ ॥
आहारेद्वेषिणं पश्यन् पुतचित्तं मुददितं । वि-
द्याद्धीनो मुमूर्षु तमुन्मादेनातिपातिनः । क्रो-

धनं त्रासबहुलं हन्त्युन्मादः शरीरिणम् ॥१९॥
नृत्यं रक्षोगणैः साकं यः स्वप्नेऽम्भसि सीदति ।

सप्राप्य भृशमुन्मादं याति लोकमतः परम् २०

अर्थ—एकठिकाने बहुत देरीतक ध्यानका लगजाना, मनमें छद्मे ग और तर्क वितर्क, सर्व वस्तुमात्रमें तर्क करे अराति और बलहानि ये लक्षण उन्मादरोग होनेवाले रोगीकेहै वह इसी रोग से मरे। जो मनुष्य भोजन नहीं करे, निमग्न चित्तसें देखे, तथा आनंदसें पीडित चित्त जिसका अर्थात् अत्यंत आनंदित रहे। एवं जो अत्यंत क्रोधी और जिसको अत्यंत त्रासहोय वह अति प्रबल उन्मादरोगसें मरनेवाला जानना ये जाग्रत अवस्थाके चिह्न हैं। और जिस मनुष्यके ये जाग्रत अवस्था चिह्नहो वह स्वप्नमें राक्षसोंके समूहोंकरके नाचताहुआ जलमें डूबजावे। वह उन्मादरोगको प्राप्त हो मृत्युको प्राप्त होताहै।

अपस्माररोगे

असत्तमः पश्यति यः शृणोत्यप्यसत्तुः स्वरान् ।
बहून् बहुविधान् जाग्रत् सोऽपस्मारणे बध्य-
ते २१ मत्तं नृत्यन्तमाविध्य प्रेतो हरति यं नरम् ।
स्वप्ने हरतितं मृत्युरपस्मारपुरःसरः ॥ २२ ॥

अर्थ—जो मनुष्य जाग्रत अवस्थामें अकस्मात् अनेक प्रकारके भयानक दुष्टस्वरूपोंको देखे और अनेक प्रकारके दुष्टशब्दोंको सुने वो अपस्मार (मृगी) रोग प्रगट होकर और इसी रोगसें माराजाय। एवं यही मनुष्य स्वप्नमें उन्मत्तहो नाचने लगे उस नाचते हुएको मृतपुरुष बांधकर लेजाय वो अपस्मारकरके मरे इसमें संदेह नहीं।

स्तम्भेते प्रतिबुद्धस्य हनूमन्ये तथाक्षिणी ॥
यस्य तं बहिरायामो गृहीत्वा हन्त्यसंशयम् २३

अर्थ—जिस जगतेहुए पुरुषके ठोडी, मन्यानाडी, और नेत्र ये स्तम्भितहोजावे उसको बहिरायाम (वादीका रोग) होकर निश्चयमरता है।

शङ्कुलीरप्यूपान्वै स्वप्ने खादति यो नरः ॥
सचेत्तादृक् छर्दयति प्रति बुद्धेन जीवति ॥ २४ ॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमें पूड़ी, पूआ खायकर फिर उसी-प्रकार उलटी करदे और जगपड़े तो वो नहीं जीवे।
अनेक रोगोंमें विविधस्वप्न

ज्वरितानां शुनासख्यं कपिसख्यन्तु शोषिणाम्
उन्मादे राक्षसैः प्रेतैरपस्मारे प्रवर्तनम् ॥ २५ ॥
मेहातिसारिणां तोयपानं स्नेहस्य कुष्ठिणाम् ।
गुल्मेषु स्थावरोत्पत्तिः कोष्ठे मूर्ध्नि शिरोरुजि ॥ २६ ॥
शङ्कुलीभक्षणं छर्द्यामध्वाश्वासपिपासयोः ॥
हारिद्रं भोजनं वापि यस्य स्यात्पाण्डुरोगिणः
रक्तपित्ती पिबेद्यश्च शोणितं सविनश्यति ॥ २७ ॥

अर्थ—स्वप्नमें ज्वर होनेवाले मनुष्योंकी कुत्तेकेसाथ प्रीति होती है। जिनके शोषरोग होनेवालाहो उनकी बंदरोंके साथ प्रीति होती है। उन्माद होनेवालेकी राक्षसोंके साथ, अपस्मार (मृगी) रोग होने वालेकी प्रेतोंके साथ प्रीति होती है। प्रमेह रोगवाले और अतिसारी स्वप्नमें जलपीते हैं। कुष्ठहोनेवाले तेल पीते हैं। गुल्मरोग होनेवालोंके कोठेमें और मस्तकपर वृक्षोत्पत्तिहो। मस्तकरोग और छर्दिरोग होनेवाला मनुष्य चनेकी ति-

लमिली पूड़ी खाताहै । और श्वासरोग तथा प्यासरोगवाला मा
ग चलताहै । पांडुरोग होनेवाला हलदी मिले पदार्थ खाताहै
और जो रक्तपित्ती स्वप्नमें रुधिर पीताहै वो अवश्य मरण पावे।

एतानि पूर्वरूपाणि यः सम्यगवबुध्यते ॥

स एषामनुबन्धश्च फलञ्च ज्ञातुमर्हति ॥ २८ ॥

इमां श्वाप्यपरान्स्वप्नान् दारुणानुपलक्षयेत् ॥

व्याधितानां विनाशाय क्लेशाय महते पिवा २९

अर्थ-जो पुरुष इन रोगोंके पूर्वरूपोंको उत्तमरीतिसें जानता
है वह इन दुष्ट पूर्वरूपोंका यत्न और इनके फलकोभी जानताहै
इसप्रकार यह मनुष्य इनको और अन्य दुष्ट स्वप्नोंको रोगीकी
मृत्युके अर्थ अथवा घोर कष्टकेलिये देखता ।

अथान्याशुभस्वप्नाः

यस्योत्तमाङ्गे जायन्ते वंशगुल्मलतादयः ॥

वयांसि च विलीयन्ते स्वप्ने मौण्ड्यमियाच्च

यः ॥ ३० ॥ गृध्रोलूकश्चकाकाद्यैः स्वप्ने यः

परिवार्यते ॥ ३१ ॥

अर्थ-अब अन्य अशुभ स्वप्नोंको कहतेहैं । जैसे कि जिसके
मस्तकपर वांसका वृक्ष, गुल्म (छोटा जवासेके सदृश वृक्ष)
और लताप्रगटहो, और जिसके देहमें पक्षी प्रवेश करे, तथा
स्वप्नमें मुंडित होकर गमन करे, और जिसको गीध, उल्ल कुत्ता
और कौआ आदि घ्रास देवे ।

रक्षःप्रेतपिशाचस्त्रीचाण्डालद्रमडादिकैः ॥

वंशवेत्रलतापाशतृणकण्टकसङ्कटे ॥ ३२ ॥

प्रमुह्यन्ति हि यः स्वप्ने लगाति प्रपतत्यपि ॥

भूमौ पांसूपधानायां वल्मीके वाथ भस्मानि ३३

श्मशानायतनश्च स्वप्ने यः प्रपतत्यपि ॥

कलुषेऽम्भसि पङ्के वा कूपे वा तमसावृते ॥ ३४ ॥

स्वप्ने मज्जति शीघ्रेण स्रोतसा न्हियते च यः ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें राक्षस, प्रेत, पिशाच, स्त्री, चांडाल
द्रमडादिकोंकरके वांस, वेत, लता, फांस तिनका, और कांटेके
संकटमें मोहितहो, लगकर गिरपड़े, तथा रेतली पृथ्वीमें तथा
सर्पकी वांवीमें, राखमें श्मशानमें, देवस्थानोंमें, गड्ढेमें, दुष्ट
जलमें, कीचमें, अंधौए कूपमें गिर और पानीके वेगकरके जो
हरण करा जाय अर्थात् वह जावे ।

स्नेहपानं तथाभ्यङ्गप्रच्छर्दनविरेचने ॥ ३५ ॥

हिरण्यलाभः कलहः स्वप्ने बन्धपराजयौ ॥

उपानद्युगनाशश्च प्रपातः पांसुचर्मणोः ॥ ३६ ॥

हर्षस्वप्ने प्रकुपितैः पितृभिश्चावभर्त्सनम् ॥

दन्तचन्द्रार्कनक्षत्रदेवतादीपचक्षुषाम् ॥ ३७ ॥

पतनं वा विनाशो वा स्वप्ने भेदो नगस्य वा ॥

अर्थ-स्वप्नमें तेलका पीना तथा देहमें लगाना उलटी करना,
दस्त होना, तथा सुवर्णका मिलना, कलह होना, बंधनमें पडना
और हारना, जोड़ियोंका नाश, पांसू और चमडेका गिरना
तथा स्वप्नमें खुसी होना, और कुपितहुए पित्रीश्वरोंकरके लल-
कारा जाना, दांत, चंद्र, सूर्य, नक्षत्र, देवता, दीपक और नेत्र
इनका गिरपडना अथवा नाश होना तथा पर्वतका टूटना ।

रक्तपुष्पं वनं भूमिं पापकर्माल्याश्रिताम् ३८॥
गुहान्धकारं संबाधं स्वप्ने यः प्रविशत्यपि ॥
रक्तमालीहसन्नुच्चैर्दिग्वासा दक्षिणां दिशम् ३९
दारुणामटवीं स्वप्ने कपियुक्तेन याति वा ॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्ने लालपुष्प वन, पृथ्वी, हिंसाघर
फा और अन्धकार इनमें प्रवेश करे तथा लालमालाको
खिल खिलायके हसता, नंगाहो दक्षिण दिशाको जाय
बंदरकोसाथ लेकर दारुण वनीमें प्रवेश करे ।

कषायिणामसौम्यानां नग्नानां दण्डधारिणाम् ४०
कृष्णानां रक्तनेत्राणां स्वप्ने नेच्छन्ति दर्शनम् ॥
कृष्णापापा निराचारा दीर्घकेशनखस्तनी ४१
विरागमाल्यवसना स्वप्ने कालनिशा मता ॥
इत्येते दारुणाः स्वप्ना रोगीयैर्याति पञ्चताम् ४२
अरोगः संशयं गत्वा कश्चिदेव विमुच्यते ॥

अर्थ—कोरडाको हाथमें लिये भयंकर रूपवाले नग्न दंडको
धारण करनेवाले काले लालनेत्रवाले पुरुषोंका स्वप्ने दर्शन
होना अशुभ है । काली पापिष्ठ अमंगली आचरणवाली तथा के-
श नख और स्तन जिसके लंबे होय और दुष्ट रंगकी माला त-
था वस्त्रोंको धारण करनेवाली ऐसी स्त्रीका स्वप्ने दीखना काल-
रात्री जाननी । ये संपूर्ण दारुण स्वप्न है यदि रोगी देखे तो
मृत्युको प्राप्त हो, और आरोग्य पुरुष देखे तो संशयको प्राप्त
हो, ऐसे दुष्टस्वप्नोंमें कोईभी पुण्यवान् पुरुष बचता है ।

तथा च सुश्रुते

स्नेहाभ्यक्तशरीरस्तु करभव्यालगर्दभैः ॥४३॥

वराहैर्महिषैर्वापियोयायादक्षिणामुखः ॥
रक्ताम्बरधरा कृष्णाहसन्ती मुक्तमूर्धजा ॥ ४४ ॥
यं वा कर्षति बद्धा स्त्री नृत्यन्ती दक्षिणामुखम्
अन्त्यावसायिभिर्यो वा कृष्यते दक्षिणामुखः
परिष्वजेरन् यं वापि प्रेताः प्रव्रजितास्तथा ॥

अर्थ—अब सुश्रुतके मतसें दुष्ट स्वप्न कहते हैं जैसे कि दे-
हमें तेलका लगाना, तथा ऊंट, सर्प, गधा, सूकर, और भैंसा
इनपर बैठकर जो दक्षिणदिशाको जाय तथा लाल वस्त्रके धा-
रण करनेवाली काली, बाल जिसके खुल रहे ऐसी स्त्री हसती
नाचती जिस मनुष्यको आंधकर दक्षिणदिशाको घसीटे अथवा
जो चांडालोंकरके दक्षिणदिशाको घसीटा जावे अथवा जिसको
मृतपुरुष और संन्यासी आलिंगन करे ।

मूर्धन्याघ्रायते यस्तु श्वापदैर्विकृताननैः ॥४६॥
पिबेन्मधु च तैलं च यो वा पङ्केऽवसीदति ॥
पङ्कप्रदिग्धगात्रो वा प्रनृत्येत्प्रहसेत्तथा ॥ ४७ ॥
निरम्बरश्च यो रक्तां धारयेच्छिरसि स्रजम् ॥

अर्थ—स्वप्ने जिसके मस्तकको विकराल मुखके कुत्ते सूंघे,
और जो सहत तैल पीवे, अथवा कीचमें डूबजावे, अथवा जि-
सके संपूर्ण अंगोंमें कीच लगजावे, नाचें, हंसे, तथा नग्नहो म-
स्तकपर लाल पुष्पकी माला धारण करे ।

यस्य वंशो नलो वापि तालो वोरसि जायते ४८
यं वा मत्स्यो ग्रसेद्यो वा जननीं प्रविशेन्नरः ॥
पर्वताग्रात्पतेद्यो वा श्वभ्रे वा तमसावृते ॥४९॥

न्हियते स्रोतसा यो वा यो वा मौढ्यमवाप्नुयात्
पराजीयेत बध्येत काकाद्यैर्वाभिभूयते ॥५०॥

अर्थ-स्वप्नमें जिसकी छातीमें मांसका नरसलका अथवा सा
डका वृक्ष उत्पन्न हो, तथा जिसकी मछली निगल जावे, अथवा
अपनी मातामें प्रवेश कर जावे पर्वतके अग्रभागसे अंधकायुत
गड्ढेमें गिरे, अथवा पानीके वेगसे बहिजावे, वा मुंडन हो, तथा
शत्रुसे पराजित हो वा बंधनको प्राप्त हो, एवं जो काक (चील,
गीध, घूषू) आदिमें पीडित होवे ।

यः पश्येद्देवतानां वा प्रकम्पमवनेस्तथा । शा-
ल्मलीकिंशुकं यूपं वल्मीकं पारिभद्रकम्
॥ ५१ ॥ पुष्पाढ्यं कोविदारं वा चितां यो
वाधिरोहति । कार्पासतैलपिण्याकलोहानि ल-
वणंतिलान् ॥ ५२ ॥ लभेताश्नाति वा पक्व-
मन्नं यश्च पिबेत्सुराम् । स्वस्थः स लभते
व्याधिं व्याधितो मृत्युमृच्छति ॥ ५३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें देवप्रतिमाको और पृथ्वीको हिलती
देखे, तथा सेमरका वृक्ष, टाकका वृक्ष, यूप (यज्ञमें पशु मार-
नेका स्तंभ) वमई, नीमका वृक्ष, और फूलाहुआ कचनारका
वृक्षको देखे अथवा अपनेको चितामें बैठा देखे, तथा कपास
तेल, खल, लोहेके पदार्थ, नोन, तिल, ये प्राप्त होय अथवा
पक्व अन्न (पूड़ी कचोड़ी, लड्डू आदि) को स्वप्नमें भक्षण करे,
दारु पीवे, इत्यादि स्वप्नोंसे स्वस्थ पुरुष रोगीहो और रोगी
पुरुषकी मृत्यु होय ।

देवद्विजादिभूपानां प्रजानां क्रोध एव च । आ-
लिङ्गनं कुमारीणां प्राणिनां चैव मैथुनम् ॥५४॥
हानिश्चैव स्वगात्राणां वीरकण्ठमनःप्रियान् ।
दक्षिणाशाभिगमनं व्याधिर्नाभिभवस्तथा ५५
फलापहारश्च तथा शाङ्खलानां विशोधनम् ।
काषायवस्त्रधारित्वं तद्वत्क्रीडनके तथा ॥५६॥
स्नेहपानावगाहौ च रक्तं माल्यानुलेपनम् ।
एवमादीनिचान्यानि दुःस्वप्नानिविनिर्दिशेत् ५७

अर्थ-विष्णुपुराणमें लिखाहै कि स्वप्नमें देव ब्राह्मण आदिका
राजाका और प्रजाका क्रोधितहोना, कुमारी (कन्याओंका)
आलिङ्गन करना, पशुआदि प्राणियोंका मैथुन देखना, अपने
देहकी हानी वीर, कंठ, और मनवांछित पदार्थोंका नाश दे-
खना अपनेको दक्षिणादिशामें जाताहुआ देखे, तथा रोगसे आ-
कांत देखे, फलोंका हरण, घासका काटना, तथा गेरुआ कपड़े
पहने उसीप्रकार अपनेको खेलता तेलपीता तेलसे स्नान करता
लाल पुष्पमाला और लालचंदन धारण करे हुए देखना, इनसे
आदिले और बहुतसे दुःस्वप्न जानने चाहिये ।

वराहः

हरिणारोहे भ्रमणं मृत्युर्न चिरेण सुकरारोहे ।
उष्ट्रारोहे व्याधिर्वृद्धिः स्यात्कुञ्जरारोहे ॥५८॥

अर्थ-वराहमिहिर लिखते हैं कि स्वप्नमें हरिणके ऊपर अ-
पनेको बैठा देखेतो भ्रमण करे, और शूकरके ऊपर बैठा दे-

खेतो थोड़ेही कालमें मृत्यु हो, उसी प्रकार ऊंटपै बैठनेसें रोग और हाथीपर बैठनेसें कुटुंबवृद्धि होय ।

मार्कण्डेयः

वान्त्यामूत्रपुरीषं तु सुवर्णं रजतं तथा । प्रत्यक्षं
मथवा स्वप्ने जीवेत दशमासिकम् ॥ ५९ ॥
लोहदण्डयुतं कृष्णं नरं कृष्णपरिच्छदम् । स्व-
प्ने च पार्श्वतो दृष्ट्वा त्रिरात्रान्मृत्युमादिशेत् ६०

अर्थ—मार्कण्डेय ऋषि लिखते हैं कि जो मल, मूत्र, सुवर्ण और चांदीकी वमनको जागते अथवा स्वप्नमें देखे वो मनुष्य दश महिने जीवे । जो मनुष्य स्वप्नमें लोहदंडका धारण करनेवाला और संपूर्ण परिच्छद (हाथी घोड़ा आदि) जिसके काले हो ऐसे पुरुषको अपने पास खड़ा देखे वो तीन रात्रिमें मरेगा ऐसा जानना ।

करालैर्विकटैः कृष्णैः पुरुषैरुद्यतायुधैः । पाषा-
णैस्ताड्यते स्वप्ने सद्यो मृत्युर्भवेन्नरः ॥ ६१ ॥

अर्थ—जो स्वप्नमें कराल, विकट, काले पुरुष, हाथमें शस्त्र ले रक्खे हो तथा पत्थर मारते हो ऐसा देखे वो शीघ्र मरे ।

रक्तकृष्णाम्बरधरा गायन्ती च हसन्ती च ।
दक्षिणाशां नयेन्नारी स्वप्ने सोपि न जीवति ॥ ६२ ॥

अर्थ—लाल अथवा काले वस्त्रके धारण करनेवाली स्त्री गाती हँसती जिसको स्वप्नमें दक्षिणादिशाको लेजावे वो मनुष्य नहीं जीवे ।

यस्तु प्रावरणं शुक्लं स्वप्ने पश्यति मानवः । कृ-
ष्णरक्तमपि स्वप्ने तस्य मृत्युरुपस्थितः ॥ ६३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमें अपने ओढ़ने बिछानेके वस्त्रोंको सफेद वा काले और लाल देखे उसकी मृत्यु उपस्थित है ऐसा जानना ।

श्वप्ने यो निपतेत्स्वप्ने द्वारं चास्य पिधीयते ।
न चोत्तिष्ठति यस्तस्मात्तदन्तं तस्य जीवितम् ६४

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमें गड्ढेमें गिरपड़े, जिसके घरके कि-बाड़ लगजावे वो पुरुष जबतक शय्यासें नहीं उठे तबतकही उसका जीवन है ऐसा जानना ।

रक्तगन्धप्रलिप्ताङ्गो रक्तमाल्योपशोभितः । तै-
लाभ्यक्तोऽतिपीतश्च मुण्डितो रक्तवस्त्रधृक् ६५
खरमारुह्य वेगेन दक्षिणां दिशमाव्रजेत् ।
स्वात्मा च दृश्यते स्वप्ने सयातियममन्दिरम् ६६

अर्थ—रक्तगंध और लालफूल माला जिसने पहिर रक्खी हो तथा तेलको लगावे तथा पीवे । मुंडित हो लालवस्त्रको धारण कर गड्ढेके ऊपर बैठ वेगसें दक्षिणादिशामें जाँय इसप्रकार जो मनुष्य अपने आपको स्वप्नमें देखें वह अवश्य यमराजके घरको पधारे ।

अर्थ—जिस मनुष्यके स्वप्नमें दांत और बाल गिरजावे उसका धननाश और व्याधिपीडा होय ।

दन्ता यस्य विशीर्यन्ते केशा यस्य पतन्ति च ।
धननाशो भवेत्तस्य व्याधिपीडाप्यसंशयम् ६७

अर्थ—स्वप्नमें जिसके पीछे शींगवाले (बैल, भैंसा, आदि) और डाढ़ावाले (सिंह वघेरा कुत्ता आदि) और बंदर तथा सूअर दौड़े । उसको राजकुलसें भय होय ।

अभिद्रवन्ति यं स्वप्ने शृङ्गिणो दंष्ट्रिणोऽथवा ।

वानरा वा वराहा वा तस्य राजकुलाद्भयम् ॥ ६८ ॥

स्वप्नेभ्यस्तु रजसा तैलेन च घृतेन च । स्नेहे

न वा तथान्येन व्याधिं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ—जो स्वप्ने धूल, वा तैल, तथा घीको देहमें लगा है एवं और प्रकारका स्नेह (चरबीआदि) को लगाता है अवश्य रोगी होय ।

रक्ताम्बरधरानारी रक्तगन्धानुलेपना । अवगूह

ति यं स्वप्ने तस्य मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥ ७० ॥

अर्थ—लाल वस्त्र और लाल चंदनके धारण करनेवाली जिस पुरुषका आलिंगन करे उसकी मृत्यु हो ।

कृष्णाम्बरधरानारी कृष्णगन्धानुलेपना । अव

गूहति यं स्वप्नेऽकल्याणं तस्य निर्दिशेत् ॥ ७१ ॥

अर्थ—काले वस्त्र और काले चंदनके धारण करनेवाली जिस पुरुषका आलिंगन करे उसका अकल्याण जानना ।

स्वप्नेषु नग्रान्मुण्डांश्च रक्तकृष्णाम्बरावृतान्

व्यङ्गांश्च विकृतान्कृष्णान्सपाशान् सायुधानां

बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दिशमाश्रितान् ।

महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोयस्तु पश्यति । स स्व

स्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पञ्चताम् ॥ ७३ ॥

अर्थ—स्वप्ने नंगे, मुंडित, लाल काले वस्त्रके धारण करनेवाले, अंगहीन, विकराल, काले फांसी और शस्त्रोंको लिये ऐसे पुरुष बांधते मारते दक्षिणदिशाको ले जाते तथा

अशुभस्वप्नाः
दंष्ट और गधेपर चढ़े हुए जिस स्त्री पुरुषको देखे वह नरामय होगी होय और जो रोगी है वह मृत्यु पावे ।

अधोयोनिं पतत्युच्चाजले ग्रीवा विलीयते । श्वा

पदैर्हन्यते योपि मत्स्याद्यैर्गिलितो भवेत् ७४ ॥

यस्य नेत्रे विलीयते दीपो निर्वाणतां व्रजेत् ।

तैलं सुरां पिबेद्वापि लोहं वा लभते तिलान् ७५ ॥

पक्वान्नं लभतेऽश्नाति विशेत्कूपं रसातलम् । स

स्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पञ्चताम् ७६ ॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्ने अपनेको पर्वतवृक्षआदि ऊंचे स्था-

नसैं गिरा हुआ देखे तथा पानीमें डूबा हुआ अग्निमें जला हुआ

तथा कुत्तानें नखोंसैं घायल करा हुआ मछलीककें भक्षित, अ-

कस्मात् नेत्र जाते रहे, तथा अकस्मात् दीपक बुझा हुआ ऐसा

देखे तथा तैल, दारू इनको पीवे, लोह, तिल इनका लाभ होय

तथा पक्वान्नका लाभ होकर उसको भोजन करे, तथा कूआमें घ

पातालमें प्रवेश करे, इस प्रकारके दुष्ट स्वप्न देखनेसैं जिसकी

प्रकृति स्वस्थ है उसको रोग होय और जो रोगी है वो मरे ।

दुःस्वप्नानेवमादींश्च दृष्ट्वा ब्रूयान्न कस्यचित् ।

स्नानं कुर्यादुषस्येव दद्याद्धेमतिलानयः ॥ ७७ ॥

पठेत्स्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् ।

कृत्वैवं त्रिदिनं मर्त्यो दुःस्वप्नात्परिमुच्यते ७८ ॥

अर्थ—पूर्वाक्त नग्रमुण्डादि दुष्ट स्वप्नों देखकर किसीसैं न कहे

और प्रातःकाल स्नान कर सुवर्ण और तिलका और लोहका

दान करे फिर दुष्ट स्वप्नों नाशकर्ता ऐसे देवताओंके (विष्णु

सहस्रनामादि) स्तोत्रोंका पाठ करे । इसप्रकार दिनमें कर रा-

त्रिमं देवमन्दिरमें स्थित हो जागरण करे इसप्रकार तीन दि-
करनेसे मनुष्य दुःस्वप्नके फलसे छूट जाता है ।

ग्रन्थान्तरे च

स्तुतिश्च वासुदेवस्य तथा तस्य च पूजनम् ।

नागेन्द्रमोक्षश्रवणं ज्ञेयं दुःस्वप्ननाशनम् ॥७९॥

अर्थ—औरभी ग्रन्थान्तरोंमें लिखा है कि श्रीवासुदेवकी स्तु-
ति तथा श्रीवासुदेव भगवान्का पूजन और गजेन्द्रमोक्षका श्र-
वण करनेसे दुःस्वप्नका फल नष्ट होता है ।

पराशरस्मृतौ

देवद्विजाग्निप्रतिपूजनानि मन्त्रोपवासादिपवित्र-
मेवा तिलान्नगोभूमिहिरण्यदानं दुःस्वप्नसंदर्श-
ननाशनानि ॥८०॥ अथाम्बुसंस्पर्शन मन्त्रहो-
मतिलप्रदानं तपनं च भूयः । शान्तिर्जपो होम-
स्तथान्नदानंदुःस्वप्नहन्तृणि पयश्च गाङ्गम् ॥८१॥

अर्थ—पराशरस्मृतिमें लिखा है कि देव ब्राह्मण और आ-
इनका पूजन, गायत्र्यादि दिव्य मंत्रोंका जप करना, उपवासादि
पवित्र कर्मोंका अनुष्ठान, तथा तिल, अन्न, गौ, पृथ्वी, और
सुवर्णका दान, ए सब दुःस्वप्न देखनेके फलको नष्ट करे है । उ-
सीप्रकार जलोंका स्पर्श, मन्त्रजापपूर्व होम, तिलदान, तप करना
शान्ति कराना, जप, होम, अन्नदान और श्रीभागीरथीगंगाके ज-
लका सेवन दुःस्वप्नकी शान्ति करे है ।

सुश्रुते च

स्वप्नानेवाविधान् दृष्ट्वा प्रातरुत्थाय यत्नवान् ।
दद्यान्माषांस्तिलालोहं विप्रेभ्यः कञ्चनं तथा ।

८२ ॥ जपेच्चापि शुभान्मन्त्रान् गायत्रीं त्रिपदां
तथा । दृष्ट्वा च प्रथमे यामे सुप्यात् ध्यात्वा पुनः
शुभम् ॥ ८६ जपेद्दान्यतमं देवं ब्रह्मचारी स-
माहितः । न चाचक्षीत कस्मैचिद्दृष्ट्वा स्वप्नम-
शोभनम् ॥ ८४ ॥ देवतायतने चैव वसेद्वात्रित्रयंत
था विप्रांश्च पूजयेन्नित्यं दुःस्वप्नात्परिमुच्यते ८५

अर्थ—सुश्रुतमें लिखा है कि पूर्वोक्त अशुभ स्वप्नों देखे तो
प्रातःकाल उठकर यत्नपूर्वक ब्राह्मणोंको उडद, तिल, लोह,
और सुवर्णका दान करे । तथा शुभवैदिकमंत्रोंका तथा त्रिपदा
गायत्रीमंत्रका जप करे, यदि रात्रिके प्रथमप्रहरमें स्वप्न देखे तो
शुभवस्तुका स्मरण कर फिर शयन करे अथवा अपनी इच्छाके
अनुसार चाहिये जिस देवताका ध्यान करे और ब्रह्मचर्यमें र-
हना, दुष्ट स्वप्नको किसीके आगे कहे नहीं, और देवमन्दिरमें
तीन रात्र जागरण करे, नित्य ब्राह्मणोंका पूजन कराकरे तो
दुःस्वप्नसे छूट जावे ।

चरके

अकल्याणमपि स्वप्नं दृष्ट्वा तत्रैव यः पुनः । पश्ये-
त्सौम्यं शुभाकारं तस्य विद्याच्छुभं फलम् ॥ ८६ ॥

अर्थ—चरकमें लिखा है कि यदि यह प्राणी दुःस्वप्न देखे और
उसीके पिछाडी शुभस्वप्न देखे तो उसका शुभही फल जानना

अथ शुभस्वप्नानाह

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि प्रशस्तस्वप्नदर्शनम् । देव-
द्विजान् गोवृषभान् जीवतः सुहृदो नृपान् ॥ ८७ ॥

समिद्धमग्निं विप्रांश्च निर्मलानि जलानि च ॥ प-
श्येत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥८८॥

अर्थ—अब इसके उपरान्त उत्तम स्वप्नदर्शनको कहते हैं। जैसे कि देवता, ब्राह्मण, गौ, बैल, जीवते हुए अपने सुहृद, राजा, देदीप्यमान अग्नि, विप्र, और निर्मल जलोंको यह प्राणी कल्याणके लाभार्थ और व्याधीके दूर होनेके लिये देखता है।

मांसं मत्स्यान् स्रजः श्वेता वासांसि च फलानि
च ॥ लभते धनलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥८९॥

अर्थ—मांस, मछली, श्वेत फूलमाला, श्वेत वस्त्र, और फल, इनको यह प्राणी स्वप्नमें धनके लाभार्थ और रोगके दूर होनेके लिये देखता है।

महाप्रासादसफलवृक्षवारणपर्वतान् । आरोहे
द्रव्यलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ९० ॥

अर्थ—बड़ा भारी मंदिर, सफल वृक्ष, हाथी, और पर्वत, इनपर स्वप्नमें यह प्राणी द्रव्यलाभके और रोग दूर होनेके अर्थ चढता है।

नदीनदसमुद्रांश्च क्षुभितान् कलुषोदकान् ।

तरेत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥९१॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमें बड़े हुए नदी, नद, समुद्र, दूषित जलको तरता है, अर्थात् इनके पार जाता है, वो कल्याण, लाभ, और रोगमुक्तिके अर्थ है।

उरगो वा जलौका वा भ्रमरो वापि यं दशेत् । आ-
रोग्यं निर्दिशेत्तस्य धनलाभं च बुद्धिमान् ॥९२॥

अर्थ—जिस प्राणीको स्वप्नमें सर्प, जोक, अथवा भौंरा मक्खी काटे उसको आरोग्य और धनका लाभ बुद्धिवान् पुरुष कहै।

एवंरूपान् शुभान् स्वप्नान् यः पश्येद्द्वयाधितो
नरः ॥ स दीर्घायुरिति ज्ञेयस्तस्मै कर्म समा-
चरेत् ॥ ९३ ॥

अर्थ—इसप्रकार जो रोगी मनुष्य शुभ स्वप्न देखता है उसकी दीर्घायु जाननी इसकी चिकित्सा वैद्यको करनी चाहिये।

ग्रहनक्षत्रताराणां चन्द्रमण्डलदर्शनम् । भास्करो
दयनं चैव प्रज्वलन्तं हुताशनम् ॥९४॥ हर्म्येष्वा
रोहणं चैव प्रासादशिरसोऽपि वा । एवमादीनि
संदृष्ट्वा नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ९५ ॥

अर्थ—ग्रह, नक्षत्र, तारागण, चन्द्रमण्डल, सूर्योदय, प्रज्वलित अग्नि, महलके ऊपर चढना, तथा मंदिरके ऊपर चढना इत्यादि अन्य शुभ स्वप्न देखनेसे प्राणीको सिद्धिकी प्राप्ति होती है।

स्वप्ने तु मदिरापानं वसामांसस्य भक्षणम् । कृ-
मिविष्टानुलेपं च रुधिरणाभिषेचनम् ॥९६॥
भोजनं दधिभक्तस्य श्वेतवस्त्रानुलेपनम् । रत्ना-
न्याभरणादीनि स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ ९७ ॥

अर्थ—स्वप्नमें मदिराका पीना, वसा (चरबी) मांसका भक्षण करना, देहमें कृमि पडजावे तथा सर्व अंगमें विष्ठा लगी प्रतीत हो, तथा रुधिरसे स्नान दहीभातका भोजन, सपेद वस्त्र और सपेद चंदनका लगाना, तथा रत्न, भूषण आदिका देखना शुभ है।

देवविप्रद्विजच्छत्रतुषपङ्कजपार्थिवान् । शुक्लपु-
ष्पाम्बरधरां प्रशस्ताभरणाङ्गनाम् ॥९८॥ वृष-
भं पर्वतं क्षीरफलवृक्षाधिरोहणम् । दर्पणामिष-

माल्याप्तिस्तरणं च महाम्भसा ॥ ९९ ॥ दृष्ट्वा
स्वप्नेऽर्थलाभः स्याद्रोगमुक्तिश्च जायते ।

अर्थ—देवता, ब्राह्मण, द्विज (त्रिवर्ण) छत्र, तुष, कमल, रा
सपेद पुष्प और सपेत आभूषणके धारण करनेवाली स्त्री, बै
पर्वत, दूध, फल, जिन्मे लग रहे ऐसे वृक्षोंपर चढ़ना, दर्पण, मां
और माला इनकी प्राप्ती होना, बड़े भारी जलाशयके पार हो
इत्यादि स्वप्नमें देखनेसे धनकी प्राप्ती हो और रोगसे मुक्ति होती

बृहद्यात्रायां वराहः

शैलप्रासादनागाश्च वृषभारोहणं हितम् ॥ १०० ॥
चन्द्रतारार्कग्रसनं परिमार्गण एव वा । भूम्य-
म्बुधीनां ग्रसनं शत्रूणां च वधक्रिया ॥ १०१ ॥
जयो विवाहयूतेषु संग्रामेषु तथा जयः । भक्षणं
चैव मांसानां मत्स्यानां पयसस्तथा ॥ १०२ ॥
दर्शनं रुधिरस्यापि स्नानं क्षीरस्य पायसम् १०३
अत्रैव वेष्टितं भूमौ निर्मलं गगनं तथा । मुखेन
दोहनं शस्तं महिषीणां तथा गवाम् ॥ १०४ ॥
सिंहीनां हस्तिनीनां च वडवानां तथैव च । प्रा-
सादो देवविप्रेभ्यो गुरुभ्यश्च तथा शुभः १०५
अम्भसा त्वभिषेकश्च ज्ञेयो राज्यप्रदो हि सः ।

अर्थ—बृहद्यात्राग्रंथमें श्रीवराहमिहिरका वाक्य है जैसे कि स्व
प्नमें पर्वत, मंदिर, हाथी, बैल, उनपर चढ़ता । चंद्र, तारागण
और सूर्यको, ग्रसना । अथवा स्वप्नमें इनको टूटना, पृथ्वी और
समुद्रको ग्रसना, शत्रुओंको वधकरना, विवाह और जूआ खे

छनेमें जीतहोना । तथा लड़ाई वा कुस्तीमें जीत होना । मांस,
मछली, और दूधका भक्षण करना, रुधिरका देखना, तथा रु-
धिरसे स्नान करना, सुरा (दारू) रुधिर, मद्य, दूध, और स्त्री-
का भोजन, अथवा इन्ही दूध स्त्री आदिसे पृथ्वीमें लिहसजा-
ना, निर्मल आकाशका देखना, मुखमें गौ, भैंस, सिंहिनी, हथि-
नी, घोड़ी, आदिका दूध दूहना । देव, ब्राह्मण, और गुरुओं-
का मंदिर ये सब स्वप्नमें देखना शुभ है । तथा स्वप्नमें जलसे अ-
भिषेकका देखना राज्य दाता है ।

राष्ट्रेभिषेकश्च तथा छेदनं शिरसोऽपि च १०६
मरणं वह्निलाभश्च वह्निदाहो गृहादिषु । तथो-
दकानां तरणं तथा पिषमलङ्घनम् ॥ १०७ ॥
हस्तिनीवडवानां च गवाश्च प्रसवो गृहे । आरो-
हणं गजेन्द्राणां रोदनं च तथा शुभम् ॥ १०८ ॥

अर्थ—राज्यमें अभिषेक, मस्तकका काटना, मरण, अग्निका
मिलना, तथा अग्निसैं घरका फुकना, जलाशयोंका तरण, और
विषमस्थान (खाई, गड्ढा) आदिका फांदना, हथिनी, घोड़ी,
और गौका घरमें व्याहना (अर्थात् बच्चा देना) हाथीपर बैठना
तथा स्वप्नमें रुदन करना शुभ है ।

परस्त्रीणां तथा लाभस्तथालिङ्गनमेव च । नि-
गडैर्बन्धनं चैव तथा विष्टानुलेपनम् ॥ १०९ ॥
जीवानां भूमिपालानां सुहृदामपि दर्शनम् । शु-
भान्येतानि प्रोक्तानि राज्यलाभकराणि च ११०

अर्थ—परस्त्रियोंका लाभहोना, तथा परस्त्रियोंका आलिंगन

करना, हाथपैरोंमें बेडीनुका बंधन तथा विष्ठाका देहमें लेप होना शुभजीव, राजा, और सुहृदोंका दर्शन होना ये संपूर्ण स्वप्न भ राज्य लाभकारी हैं।

आचारमयूखे

आरोहणं गोवृषकुंजराणां प्रासादशैलाग्रवन-
स्पतीनाम् । विष्ठानुलेपो रुदितं मृतं च स्वप्ने
ष्वगम्यागमनं प्रशस्तम् ॥ १११ ॥

अर्थ-स्वप्नमें गौ, बैल, हाथी, मंदिर, पर्वत, वनस्पती (वृष) इनपर चढ़ना, विष्ठाका लेप होना, रुदनकरना, मराहुआ देखना, और अगम्या (भैन बेटी, आदि) से गमन करना उत्तम कहा है।

क्षीरिणं फलिनं वृक्षमेकाकी यः प्ररोहति । त-
त्रस्थः स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ११२

अर्थ-दूधवाले फलित वृक्षपर अकेला चढ़े और उसी जगह पर तो शीघ्र धनकी प्राप्ति होवे।

यस्य श्वेतेन सर्पेण ग्रस्तश्चेदक्षिणः करः । स-
हस्रलाभस्तस्य स्यादपूर्णे दशमे दिने ॥ ११३ ॥

अर्थ-जिस प्राणीको स्वप्नमें दहनें हाथको स्वेत सर्प का उसको दश दिनके भीतर एक सहस्र १०० रुपयोंका लाभ होवे।

उरगो वृश्चिको वापि जले ग्रसति यं नरम् । वि-
जयं चार्थसिद्धिं च पुत्रं तस्य विनिर्दिशेत् ११४

अर्थ-जिस प्राणीको स्वप्नमें जलमें सर्प, विच्छू, डसे उस विजय, धनकी और पुत्रकी प्राप्ति कहनी चाहिये।

प्रासादस्थस्तु यो भुङ्क्ते यो वा तरति सागरम् ।
अपि दासकुले जातः स राजा नियतं भवेत् ११५

अर्थ-जो स्वप्नमें महलपर बैठकर भोजनकरे और जो समुद्रके पार होजाय वह यदि दासकुलमेंभी उत्पन्न हुआ हो तो भी निश्चय राजा होय।

यस्तु मध्ये तडागस्य भुङ्क्ते च घृतपायसम् । अ-
खण्डे पुष्करे पत्रे तं विद्यात्पृथिवीपतिम् ११६

अर्थ-जो प्राणी स्वप्नमें तलावके बीचमें बैठकर साबत कम-के पत्तेपर घृत और खीरका भोजन करे उसको राजा जान-ना चाहिये अर्थात् राजा होय।

बलाकां कुकुटीं क्रौंचौ दृष्ट्वा यः प्रतिबुध्यति । कु-
लजां लभते चान्यां भार्यां च प्रियवादिनीम् ११७

अर्थ-जो प्राणी स्वप्नमें बगली, मुरगी, क्रौंची पक्षीको देखकर जगे तो उसको प्रिय बोलनेवाली कुलवान् भार्याकी प्राप्ति होय।

नागपत्रं लभेत्स्वप्ने कर्पूरमगरुं तथा । चन्दनं
पाण्डुरं पुष्पं तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ११८ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यको स्वप्नमें पान, कपूर, अगर, चंदन, और पीलाफूल मिले उसको धनकी प्राप्ति होय।

क्षीरं पिबति यः स्वप्ने सफेनं दोहने कृते । सो-
मपानं भवेत्तस्य भोक्ता भोगाननेकशः ॥ ११९ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें दुहाहुआ झगसहित दूध पीता है, उसको यज्ञके सोमपानकी प्राप्ति हो और अनेक भोगोंको भोगे।

दधि दृष्ट्वा भवेत्प्रीतिर्गोधूमांश्च धनागमः ।

यवान्यज्ञागमं विद्याल्लभः सिद्धार्थकानपि १२०

अर्थ-स्वप्नमें दही देखनेसें सर्व प्राणीयोंको प्रिय होय
गेंहू देखनेसें धनकी प्राप्ति और यव देखनेसें यज्ञका आगम अ
र्थात् यज्ञ होय और पीलीसरसोंके देखनेसें लाभ होय ।

रथं गोवृषसंयुक्तमेकाकी यः प्ररोहति । तत्रस्थः

स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ १२१ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें बैल जुड़े हुये रथमें अकेला बैठता
है । और उसी समय नींद खुल जावे तो शीघ्र धनको प्राप्ति होय

दधिलाभे भवेदर्थो घृतलाभे ध्रुवं यशः । घृतं

भक्षेत् ध्रुवं क्लेशो यशस्तु दधिभक्षणे ॥ १२२ ॥

अर्थ-स्वप्नमें दहीकी प्राप्ति होनेसें धनकी प्राप्ति हो, घृतके
मिलनेसें यश होय, और स्वप्नमें घृतके खानेसें क्लेश होय
और दही खानेसें यश प्राप्ति होय ।

बृहस्पतिः

मानुषस्य तु मांसानि यस्तु स्वप्नेषु भक्षयेत् ।

अपक्वान्येव सर्वाणि शृणु तस्य तु यत्फलम् ।

अर्थ-बृहस्पति लिखते हैं कि जो मनुष्य स्वप्नमें मनुष्यव
अपक्व मांसको भक्षण करता है, उसके प्रत्येक अंगकामें फल
कहता हूँ तू सुन ।

पादे पञ्चशतं लाभः सहस्रं बाहुभक्षणे । मस्त-

काशनतो राज्यं मंत्रिता हृदयाशनात् ॥ १२४ ॥

अर्थ-पैरके मांस खानेसें ५०० रुपयेकी प्राप्ति हो । एवं भु
जाके मांस भक्षणसें १००० हजार रुपयेकी प्राप्ति, मस्तक भक्षणसें
राज्य प्राप्ति, और हृदयके मांसको स्वप्नमें खानेसें मंत्री होय ।

उपानहौ ध्वजं चक्रं लब्ध्वा यस्तु विबुध्यते । अ-

सिं वा निर्मलां तीक्ष्णामध्वानं तस्य निर्दिशेत् ॥
अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें जूता (जोड़ी) ध्वजा, चक्र निर्मल
और तीक्ष्ण तलवारको प्राप्ति होकर और उसी समय जगपडे
तो उसको मार्ग चलना पड़ेगा ऐसा जानना ।

नावमारोहयेद्यस्तु नदीं वा विपुलां तरेत् । प्र-

वासं नियतं तस्य शीघ्रमागमनं पुनः ॥ १२६ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें नौकापर बड़ी भारी नदीको तरता है ।
वह अवश्य प्रदेशको जायगा और उस जगहसें शीघ्र आगमन होय ।

पीताम्बरधरानारी पीतमाल्यानुलेपना । अव-

गूहति यं स्वप्ने कल्याणं लभते हि सः ॥ १२७ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें पीले वस्त्र और पीले चंदन तथा पीले
फूलमालाके धारण करनेवाली स्त्रीका आलिंगन करना देखे तो
वो कल्याणको प्राप्ति होता है ।

श्वेताम्बरधरानारी श्वेतमाल्यानुलेपना । अव-

गूहति यं स्वप्ने तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ १२८ ॥

अर्थ-उसीप्रकार सपेद वस्त्र सपेद चंदन तथा सपेद फूलमा
लाके धारण करनेवाली स्त्री जिसको स्वप्नमें आलिंगन करे, उ
सको चारोंतरफसें लक्ष्मीका आगमन होय ।

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि कार्पासभस्मौ-

दनतक्रवर्ज्यम् । सर्वाणि कृष्णान्यतिनिन्दि-

तानि गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम् ॥ १२९ ॥

अर्थ-स्वप्नमें कपास, भस्म (राख) भात, और छाछको
त्यागकर संपूर्ण सपेद वस्तु शुभकारी है । और गौ, हाथी,

देव, ब्राह्मण और घोड़ा इनको परित्यागकर संपूर्ण कृष्णवस्त्र में दीखना अशुभ है ।

देवा द्विजास्तथा गावः पितरो लिङ्गिनो नृपाः ।
यद्वदन्ति नरं स्वप्ने तत्तथैव भवेद्भुवम् ॥ १३० ॥

अर्थ—देव, ब्राह्मण, गौ, पितर, विरक्तपुरुष, और राजा स्वप्न में जो बात कहे वो उसीप्रकार होय इसमें संदेह नहीं ।

आसने शयने याने शरीरे वाहनेऽपि वा । ज्व-
लमाने विबुध्येत तस्य श्रीः सर्वतोमुखी १३१

अर्थ—जो मनुष्य आसन, शय्यापर, सवारी में देह में वाहन (घोड़ा हाथी आदि) में अपनेको पजरता देखे और उबखत जग परे तो उसको चारोंतरफ से लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ।

वडवां कुङ्कुटीं दोलां लब्ध्वा यस्तु विबुध्यते ।
सकामां लभते भार्या सुभगां प्रियवादिनीम् ३

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्न में घोड़ी, मुरगी, और हिंडोला इन प्राप्ति हो जग परे तो वह सकामा और प्रियबोलनेवाली स्त्रीको प्राप्त होवे ।

निगडैर्बध्यते यस्तु पाशैर्वा बध्यते भृशम् । सु-
पुत्रो जायते तस्य सुप्रतिष्ठां च विन्दति १३३

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्न में बेड़ी और फासों से बंध जावे उस सुन्दर पुत्र होय और उत्तम प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ।

पराशरसंहितायां

स्वाङ्गप्रज्वलनं परोपशमनं शक्रध्वजालिङ्गकृ-
त् संयुक्तोऽपि नरैर्विपत्यच विपत्प्रक्षेपणं दि-
क्षु च । बद्धो वा निगडैर्ग्रसेच्च दहनं नारीक्षितो

बाहुना छत्रं वा द्विरदादिरोहणविधौ दिव्योऽपि
च ब्राह्मणः ॥ १३४ ॥

अर्थ—पराशरसंहिता में लिखा है कि स्वप्न में अपने अंगोंकी श्रुति देखना, शत्रुको जीतना, विजलीको छूना, विपत्तिमें भी विपत्तिका पडना. दिशाओं में फिकना. पैरों में बेड़ी परना. अग्नि की ग्रसना. भुजाओं से शत्रुदमन छत्र और हाथीपर बैठना तथा दिव्य ब्राह्मणका दर्शन होना ।

दिनकरशशिताराभक्षणस्पर्शनानि विशरणम-
पिमूर्धः सप्तपञ्चत्रिधा वा । वृषभगृहनरेन्द्रश्चेत-
सिंहाधिरोहाग्रसनमुदधिभूमौ भूमिराज्यप्रदानि ॥

अर्थ—सूर्य, चंद्र, तारागणोंका भक्षण करना. मस्तकके सात पांच अथवा तीन टूक होना बैल, घर, राजा, इनका दर्शन सपेद सिंहासनपर बैठना तथा समुद्र और पृथ्वीको ग्रस लेना इत्यादि स्वप्न पृथ्वीके राज्यदाता हैं ।

विपुलरणाविमर्दयूतवादैर्जयश्च पशुमृगमनुजानां
लब्धिरध्यासनं वा । विवसनपरिलेपोगम्यनारी
गमोवा स्वमरणाशिखिलाभः सस्यसंदर्शनंच ॥

अर्थ—स्वप्न में बड़ा भारी रण जुआ और बाद में जीत होना । तथा पशु मृग और मनुष्योंकी प्राप्ति तथा सिंहासनकी प्राप्ति दिव्यवस्त्रोंका और चंदनादिकका पहरना लगाना एवं अगम्यास्त्र सौगमन, अपना मरण देखना अग्निकी प्राप्ति और हरीहरी घासका देखना ।

सितसुरभिमनोज्ञालेपमाल्याम्बराणां द्विजसुर-
गुरुराज्ञां दर्शनं ह्याशिषश्च । मणिरजतसुवर्णा-

म्भोजपात्रेषु भुङ्क्ते घृतदधिपरमात्रं सर्वमेतच्छु-
भञ्च ॥ १३७ ॥

अर्थ-सुंदर सुगंधित सफेद चंदन आदिका लेप और फूलम-
ला तथा वस्त्रका धारण करना, ब्राह्मण देवता राजा इनका उ-
र्शन होना, तथा आशीर्वाद देना, तथा माणि, चांदी, सुवर्ण
और कमल आदिके पात्रमें घी, दही, खीरका भोजन इत्यादि
स्वप्न देखना शुभ है ।

निष्फल स्वप्न

यथास्वं प्रकृतिस्वप्नो विस्मृतो विहतश्च यः ।

चिन्ताकृतो दिवा दृष्ट्वा भवन्त्यफलदास्तु ते ॥

अर्थ-यथा प्रकृतिके अनुसार अर्थात् जैसी जिसकी वातपि-
त्तादिक प्रकृति ऐसा स्वप्न और जो स्वप्न, देखा हो उसकी या-
द भुल गई हो, और जो विहत हो (अर्थात् प्रथम दुष्ट स्वप्न
देखे फिर उसके पिछाड़ी शुभ स्वप्न देखे) और जो चिंतन
कराहुआ तथा दिनका देखा ए स्वप्न निष्फल है ।

तथाच

आयुस्तृतीयभागे शेषे पतितः प्रकीर्तितः स्व-
प्नः । अतिहासशोककोपोत्साहजुगुप्साभयाहु-
णोत्पन्नः ॥ १३९ ॥

वितथः क्षुधापिपासामूत्रपुरीषोद्भवः स्वप्नः ।

अर्थ-अत्यंत वृद्धावस्थाका स्वप्न, अत्यंत हास्य, शोक, को-
प, उत्साह, निंदा, भय, इन कारणोंसे तथा जो भूख, प्यास
और मूत्र, मलकी बाधमें स्वप्न देखे वो निष्फल है ।

प्रकृतिजन्यस्वप्न

वाताधिकेऽभ्रं भ्रमतिर्विपश्येत्कृष्णानि वर्णानि

प्रचण्डवातम् । पित्ताधिके काञ्चनरत्नमाल्यादि-
वाकराग्निज्वलनानि पश्येत् ॥ १४० ॥
श्लेष्माधिकश्चन्द्रभशुकपुष्पसरित्सरोम्भोनि
धिलङ्घनानि । काले मरुत्पित्तकफप्रकोपः सा-
धारणं स्याद्वलसन्निपातात् ॥ १४१ ॥

अर्थ-जिस प्राणीकी वातप्रकृति होती है वो आकाशमें भ्रमण
करे तथा काले रंगके पदार्थोंको देखे तथा प्रचण्ड पवन (आंधी)
को देखता है । पित्ताधिकप्रकृतिवाला मनुष्य सुवर्ण और रत्नों-
की माला, सूर्य, अग्नि और प्रकाशवान् पदार्थ (विजली आदि-
को) देखे । कफाधिकप्रकृतिवाला मनुष्य चन्द्रमाके तुल्य
सफेद पुष्प सरोवर, नदी, समुद्रको तरना इत्यादि स्वप्न देखे
और मिश्रितप्रकृतिवाले मनुष्य मिश्रितस्वप्नको देखे है ।

स्वप्नस्य प्रहरपरत्वेन फलं

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः । द्वि-
तीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ॥ १४२ ॥

चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासेन फलदः स्मृतः ।

अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत् ॥ १४३ ॥

गोविसर्जनवेलायां सद्य एव फलं भवेत् ॥ १४४ ॥

अर्थ-रात्रिके प्रथमप्रहरका देखाहुआ स्वप्न १ वर्षमें फल
देता है । दूसरे प्रहरका स्वप्न आठ महिनेमें फलदेय । तीसरे प्र-
हरका स्वप्न तीन महिनेमें और रात्रिके चतुर्थ प्रहरमें देखाहुआ
स्वप्न १ महिनेमें अपना शुभाशुभ फलकरे । और जो अरुणो-
दय (भाकफटे) स्वप्न देखाहो वह दशादिनमें फलकरे । उ-
त्तीप्रकार गौ छोड़नेके समय देखाहुआ स्वप्न शुभाशुभ फल

देता है । परंतु जो मनुष्य जिस समय जागता है उसको उसी समयका देखा हुआ फल देता है ।

स्वप्नदर्शनाविधिः

दुकूलमुक्तामणिभिर्नरेन्द्राः सामंतदैवज्ञपुरोहि-
ताश्च । तदेवतागारमनुप्रविश्य प्रवेशतस्तत्र
दिगोश्वरं च ॥ १४५ ॥ अभ्यर्च्य मैत्रस्तु पु-
रोहितस्तु संयम्य तस्यां भुवि संयतात्मा ।
ब्राह्मीशपूर्वामथ भागपुष्पं कृत्वोपधानं शिर-
सि क्षितीशः । तथैकभुग्दक्षिणपार्श्वशायी स्वप्नं
परीक्षेत यथोपदेशम् ॥ १४६ ॥

अर्थ-अब स्वप्न देखनेकी विधि कहते हैं कि, राजा-वस्त्र
मोती, मणिको ले और सामंत (सूबेदार) ज्योतिषी, पुरोहित
इनको साथले देवताके मंदिरमें जाय और उस जगे पुष्प, धूप,
दीप, नैवेद्य तथा वस्त्र रत्नादिकसैं मंत्रपाठपूर्वक इष्टदेवका पूजन
करे फिर उस राजाका पुरोहित इन्द्रियोंको जीत उसी मंदिरके
पूर्वकी ओर अथवा ईशानकी ओर विस्तारकरके और पुष्पोंको
तथा सुगंधित वस्तुको अपने सिराने धरके सोवे उसी प्रकार
स्वयं राजा एकवार भोजन करे और दहनी करवट सोवे
इसप्रकार यथोपदेश उस मंदिरमें स्वप्नकी परीक्षा करे ।

शयनके समय जपनीय मन्त्र

नमः शम्भो त्रिनेत्राय रुद्राय वरदाय च । वाम-
नाय विरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ १४७ ॥
भगवन् ! देवदेवेश ! शूलभृद्वृषवाहन ! इष्टा-

निष्टे ममाचक्ष्व स्वप्ने सुप्तस्य सान्त्वतः ॥ १४८ ॥

अर्थ-जिस समय मंदिरमें सोवे उस समय “नमः शम्भो त्रिने-
त्राय ०” इस मंत्रको जपे इसका यह अर्थ है कि त्रिनेत्र, रुद्र,
वरद, वामन, विरूप स्वप्नाधिपके अर्थ नमस्कार है हे भगवन् हे
देवदेवेश हे शूलके धारणकर्ता हे वृषवाहन निद्रामें मुझको निरं-
तर इष्ट और अनिष्ट भवितव्यको कहो ।

एकवस्त्रः कुशास्तीर्णे सुप्तः प्रयतमानसः ।
निशान्ते पश्यते स्वप्नं शुभं वा यदि वाऽ
शुभम् ॥ १४९ ॥

अर्थ स्वप्न देखनेकी इच्छावाला पुरुष एकवस्त्रको धारणकर
कुशाके आसनपर मनको एकाग्रकर शयनकरे इसप्रकार कर-
नेसैं उस प्राणीको रात्रीके अंतरमें जैसा कुछ शुभाशुभ भवित-
व्य हो ऐसा स्वप्न देखे ।

एतत्पवित्रं परमं पुण्यदं पापनाशनम् । यः
पठेत्प्रातरुत्थाय दुःस्वप्नं तस्य नश्यति ॥ १५० ॥

अर्थ-परम पवित्र पुण्यदायक और पापनाशक इस स्वप्न-
काशिका ग्रंथको प्रातःकाल उठकर जो पाठ करता है उस प्राणि-
का दुःस्वप्न देखा हुआ नष्ट हो और शुभफलकी प्राप्ति हो ।

इति श्री आयुर्वेदोद्धारक माथुर कृष्णलालांगजेन दत्तरामेण निर्मिता
स्वप्नप्रकाशिका नाम त्रयस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३३ ॥

समाप्तेयं स्वप्नप्रकाशिका ।